



काठमाण्डू-नेपाल। विश्वशान्ति भवन टमेल सेवाकेन्द्र के स्वर्ण जयंती महोत्सव में नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम विद्या देवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी। साथ है ब्रह्माकुमारों के अति. सचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. रामसिंह तथा ब्र.कु. किरण।



झज्जर-हरियाणा। 'गीता महोत्सव' के दौरान आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं आध्यात्मिक पुस्तकों का अवलोकन करते हुए हरियाणा के वन एवं लोकप्रशासन मंत्री राव नरबीर सिंह। साथ है डी.सी. एस. गोयल, ए.डी.सी. सुशील श्रवण, ब्र.कु. संतोष व अन्य।



ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्र.कु. अनुसुइया, भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी बिशन सिंह बेदी, ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, फिल्म अभिनेत्री एवं समाज सेविका प्रियंका कोठारी, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी तथा ब्र.कु. रोहित।



कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। सी.आर.पी.एफ. कमाण्डेंट चेतन चिता को राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव के लिए सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ मंचासीन हैं उनके पिता रामगोपाल चिता, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।



आगरा-शाक़ीपुरम। सेवाकेन्द्र के वार्षिक समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ज्ञान इंचार्ज ब्र.कु. शीला, ग्रामीण विद्यार्थक हेमलता दिवाकर, नंदकिशोर मृगरानी, सत्येन्द्र सिंह, ब्र.कु. ज्योत्सना, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.मधु।



लखनऊ-मुंशी पुलिचा(उ.प्र.)। 'कर्मों की गुह्य गति' पुस्तक का विमोचन करते हुए ब्र.कु. जयश्री तथा स्पार्क चैप्टर परिवार के सदस्य।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

सेवा हमारी है, हमारे का अर्थ यहाँ तन से नहीं मन से है। जीवन उन बातों से बिल्कुल भी अछूता नहीं है जिन्हें हम जानते तो हैं लेकिन अमल नहीं करते। सबसे पहले दुनिया में लोग जब प्रातःकाल उठते हैं, तो थोड़ा बहुत मंत्र जप कर परमात्मा का नाम लेते हैं और नाम लेते-लेते यह कहते कि हमारा आज का दिन अच्छा गुजरे। आप सोचिये ज़रा, सुबह का वो पाँच मिनट हमें इतनी शक्ति देता है कि पूरे दिन को हम ऊर्जान्वित कर पाते हैं। इसे कहते हैं सकारात्मकता से शुरुआत।

समाज इन बातों पर अमल भले ना करे लेकिन हमारे बड़े बुजुर्गों का अनुभव यही कहता है कि जब हम अपने आपको अनुभवों के साथ जोड़ते जाते हैं तो हम शक्तिशाली होते जाते हैं। कुछ हद तक उनका अनुभव हम सारे बच्चे भी करते आये, लेकिन पूरी तरह से समझ नहीं पाये थे। उनका हर एक अनुभव एक शक्ति के रूप में हमारे साथ चलता है, चला आ रहा है। आज भी अगर उन अनुभवों को हम थोड़ा सा साइंस की कसौटी पर लेकर चलें तो चमत्कार हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में - एक बुजुर्ग का अनुभव है कि हम दिन-रात प्रकृति के बीच में रहते हैं, खेतों के बीच में रह हरियाली देखते हैं और उन्हें देखते बहुत दूर-दूर तक हमारी नज़र जाती है। आप सोचिये ज़रा,

जब हम बहुत दूर तक देखते हैं तो हमारा दायरा बहुत बड़ा हो जाता है। इतना बड़ा कि कोई अवरोध नहीं, किसी तरह का कोई विघ्न नहीं, सिर्फ हम विस्तार को देख रहे हैं। उनका कहना था कि जितना हम खुली चीज़ों को देखते हैं उतना हमारा मन भी खुला होता जाता है। एक प्रैक्टिकल भी उन्होंने कराया कि एक बच्चे को खेतों के बीच में पढ़ने के लिए बिठाया जाये और दूसरे बच्चे को कमरे में बिठाया जाये जो 10x10 का हो। आप देखेंगे जो बच्चा खुले में पढ़ रहा हो, ओपन



स्पेस में होगा, उसका माइण्ड बहुत ब्रॉड होगा। वो चीज़ों को जल्दी ग्रहण कर लेगा, समझ लेगा। ऐसा नहीं कि कमरे में बैठा बच्चा उतना आसानी से नहीं समझेगा, समझेगा अवश्य, परन्तु उसका आई-क्यू लेवल घट जाता है। ये सारी बातें आपको भले थोड़ी सी अलग लगेंगी लेकिन ये बातें आज के दौर में सभी माइण्ड मैनेजमेंट ट्रेनर्स रखते हैं कि आप बच्चे को खुला स्पेस दो, उसे ज़्यादा

नहीं बोलो। अब ये बातें क्या आपको नई लगती हैं...! नहीं ना। क्योंकि ये हैं पहले की। लेकिन आज हम उसको फिर से री-न्यू करने की कोशिश कर रहे हैं। इसीलिए आप देखो जितने भी बड़े-बड़े साइंटिस्ट हुए, इंजीनियर्स हुए, उन सबने जो भी रिसर्च किया वो एकांत में खुले स्पेस में किया। क्योंकि वहाँ पर कुछ भी ऐसा हर्डल नहीं है। बस करते गये। शुरू में ज़रूर थोड़ी समस्या आती है लेकिन बाद में वो सबके लिए एक इतिहास बन जाता है। कहने का भाव यह है कि मन हमारा आज

बहुत सारी छोटी-छोटी रुकावटों के कारण विकसित नहीं हो पा रहा है, जैसे वाट्सएप्प, फेसबुक, यू-ट्यूब, इसके अलावा कमरे से बाहर नहीं निकलना, अंदर ही बैठे रहना। ये कुछ कारण हैं जो बच्चों को मानसिक रूप से बीमार कर रहे हैं। अनुरोध यह है कि थोड़ा अपने प्राकृतिक स्वरूप में हम पहले खुद को लायें, फिर उसी हिसाब से बच्चों को भी गाईड करें, ताकि आने वाले

समय में वो कुछ अच्छा कर जायें। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दौर है और आप उसमें कभी भी जाकर सर्च कर सकते हैं कि क्या हमारे लिए ये सारी चीज़ें अच्छी हैं, हमारे माइण्ड को विकसित करती हैं? हमारे हिसाब से तो बिल्कुल भी नहीं। क्योंकि ये सूचनाएं हमको और ज़्यादा गर्त में लेकर गई हैं, ना कि हमारा विकास हुआ है। तो जागो और मन को जगह दो।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-8 (2017-2018)

1	2	3	4	5		
6		7				
		8		9		10
						11 12
	13			14	15	
16		17		18	19	
20			21	22		23
		24	25		26	27

ऊपर से नीचे

- आज्ञा, आदेश (4)
- तुम बच्चों को माया.... जगतजीत बनना है, विजय (2)
- नसीब, भाग्य (4)
- पशु, प्राणी, पशुओं सा व्यवहार करने वाला (4)
- भारत की एक मुख्य नदी (3)
- गीला, आर्द्र (2)
- जीव, आत्मा (2)
- विनाश, नाश, भयंकर बर्बादी (3)

- बलवान, शक्तिशाली (3)
- जुगाली करना, मनन-चिन्तन (4)
- पायल की आवाज़ (4)
- शक्ति, ताकत (2)
- पुकारना, आवाज़ देना (3)
- ज्वर, दिल का गुबार, भड़ास (3)
- इन्कार, मनाही, रोकना (2)
- चमड़ी, त्वचा, खाल (2)
- मैं का बहुवचन (2)

बायें से दायें

- मनुष्य से देवता बनने के लिए दैवी.... धारण करो, मैनर्स (4)
- बाबा जानी.... है (5)
- लीन, तल्लीन (2)
- कहा गया वाक्य, वचन (3)
- सरिता, सरि, नद, शैलजा (2)
- आशीर्वाद,.... लुटाने वाले (4)
- आनन्द, सुख, लुत्फ (2)
- महीना, 30दिन (2)

- फँसना, अटकना (4)
- समाप्त, केवल, पर्याप्त (2)
- ज्ञान की धारणा से ही तुम बच्चे.... और पूजन योग्य बनते हो (3)
- ज्ञान की.... बन टिकलू-टिकलू करते रहना है (4)
- निर्माण, बनाना, बनावट (3)
- ठहरना, स्थिर होना, निर्वाह करना (3)

- ब्र.कु. राजेश, शांतिवन।